VAAGDHARA

वातें वागधारा की

नवम्बर, 2023

अंक 42

VAAGDHARA

प्यारे किसान भाइयों- बहनों, स्वराज साथियों जय गुरु !!

नवम्बर माह में कृषि कार्य और इस सर्दी की खेती के लिए आप सबको दीपावली की बहुत सारी हार्दिक शुभकामनाएं, चूँकि जब दीपावली का त्यौहार आता है तो हमारे लिए नई उम्मीदे, खुशियां और उल्लास लेकर आता है | इस त्यौहार का कृषि से बहुत जुड़ाव है जिस प्रकार से हम गोवर्धन पूजा करते हैं, गोबर के साथ पूजा, बीजों की पूजा और उसका संकलन, हमारे जो मेरियु की परंपरा है इन सबका कृषि से जुड़ाव रहा है| मैं उन सारी परंपराओ का इस संवाद में चर्चा करना नहीं चाहता ,मैं तो केवल मात्र आपसे ही आग्रह चाहता हूं कि आप अपने परिवार के बड़े बुजुर्गों से पूछे कि इस त्यौहार का हमारे जीवन में क्या महत्व है ? हमारा कृषि कार्य में क्या जीवन है और आदिवासी संस्कृति में इन त्यौहारों को कैसे मनाये जाते थे | हम आज के बाजार की चकाचौध में इन त्योहारों को मनाने की जो दौड़ में लगे हुए हैं उससे अलग होकर सोचे की हमारे रामशी, मवेशियों की पूजा, मवेशियों के रंग वो सारी क्या चीज थी उसको भी हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी बताएं और स्वयं भी करें | यह मेरा आग्रह हर स्वराज संगठन, हर स्वराज साथी, हर किसान भाई से है कि यह परम्पराएँ जरूर किसी विषय को लेकर आती है क्योंकि मुझे याद है जब मैं मवेशी की सेवा करता था तो मैंने पूछा था कि ये सिंग पे रंग क्यों करते हो, तो किसी ने बताया की उससे साल भर मवेशियों को बीमारी नहीं होती है, तो इस तरह छोटे-छोटे विषय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है |

इसके साथ मैं आग्रह करना चाहूंगा की हम इस सर्दी की खेती के लिए केवल मात्र गेहूं एक ही अनाज पर निर्भर नही रहे चूँकि वाग्धारा हमेशा आग्रह करता है कि एक तरह की खेती चिंता की बढ़ोतरी है| हमें सभी अलग-अलग प्रकार की फसलों को बोना चाहिए, हमें दलहन को भी हमारे साथ रखना चाहिए और हमारी थाली में, हमारे खाने के लिए जो भी काम में आने वाली भाजी, सब्जी, दाले उन्हें हम किस प्रकार से सर्दी के सीजन की है, जो जई हमने वर्षो से उगाना छोड़ दिया है, कम कर दिया है, उसका अपने आप में महत्व है जिस प्रकार से हम बरसात की खेती में माल और छोटे अनाज की बात कर रहे थे इसी प्रकार से आज जई का बहुत महत्व हो गया है, हमें जई की ओर जाना पड़ेगा, जई बहुत पोषक है वह मवेशियों का खाना ही नही बल्कि वो भी इंसानों का खाना है तो हमें भी हमारी खेती की विविधता को भी बनाए रखना है |

इसी के साथ हमारा एक और दूसरा त्यौहार इस महीने में है आप सब जानते हैं कि लोकतंत्र का यह त्यौहार हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है | हम सक्रिय भागीदारी के साथ चुनाव में रहे मतदाताओं को जागरूक करें और अधिक से अधिक मतदान करें क्योंकि यह हमारा नैतिक दायित्व भी है, जिस प्रकार से हम सरकार से हमारी सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा की बात करते हैं अगर वो हक मांगते है तो हमारा कर्तव्य है कि हम सही चुनाव करें हमारे क्षेत्र से सही जनप्रतिनिधि को चुने जो क्षेत्र के विकास, क्षेत्र की समस्या और समुदाय की समस्याओं को सुलझा सके, पटल पर रख सके, जिसकी बात में वजन हो | मेरा हर साथी से आग्रह है कि वह इस लोकतंत्र के पर्व में जुड़कर भागीदारी निभाए |

इस प्रकार से मैनें बहुत ही सूक्ष्म तरीके से आपसे तीन आग्रह किए है संस्कृति का, कृषि का और स्वराज का उसके लिए हमारे संगठन के साथियों से मेरा अनुरोध है अगर आप करते हैं तो आप अपने गांव में, अपने फल में, अपने संगे सम्बन्धियों में बात करें, वाग्धारा के साथियों से आग्रह है की आप विशेष रूप से इसे केवल मात्र बातों में न लेकर के अगर मैनें मिश्रित खेती या विविधता भरी खेती के लिए कहा तो, आपने कितने परिवार से बात की और कितने परिवारों ने उसे किया, संस्कृति के संवाद की बात है तो वह अपने कितने परिवारों को बताया और लोकतंत्र के लिए आपने कितने गांव में मतदान के लिए जागरूक किया इसे जरूर अपने रिकॉर्ड में रखें अपनी जानकारी में रखें ताकि आपके किये हुए पर आपको विश्वास हो और आप मजबूती के साथ खड़े हो सके, समुदाय के साथ।

धन्यवाद

जय- गुरू, जय- स्वराज !!!

आपका अपना

जयेश जोशी

परम्परागत तरीके से चने की खेती

अक्टूबर-नवम्बर माह खेती, किसानी की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण माह है । इस माह में एक ओर किसान भाई-बहन खरीफ फसलों की कटाई और गहाई कर रहे है तो दूसरी ओर रबी की बुवाई की जानी है । मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान के त्रिवेणी संगम पर रहने वाले आदिवासी समुदाय ने परंपरागत कृषि पद्धतियों को अपनाकर जहर और रसायन मुक्त पौष्टिक फसलो का उत्पादन किया है ।

इस माह के अंक में, हम आपके साथ परंपरागत कृषि पद्धति से चने की खेती के बारे में संवाद करेंगे ।

चने की परम्परागत खेतीः ऐसे क्षेत्र जहाँ सिंचाई के लिए पानी की कमी हो वहां रबी सीजन में चने की खेती की जाती है। साथ ही ऐसे खेत जिनमे धान लगाया गया है । उन खेतों में भी धान की कटाई के बाद चने की खेती करना लाभकारी होता है क्योंकि धान की कटाई के बाद खेत में बची हुई नमी में चने लगाने से कम पानी में भी अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है । चने की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट, रेतीली मिट्टी जो मध्यम या भारी हो, सबसे अधिक उपयुक्त होती है ।

खेत की तैयारीः चने की खेती के लिए सबसे पहले खेत की 1 से 2 बार जुताई कर लेना चाहिए । जुताई करने से खेत की मिट्टी भुरभूरी हो जाती है और चने के पौधो की जड़ो को हवा अच्छी तरह से मिल जाती है । जिससे इन जड़ो का विकास अच्छे से होता है । चने की बुवाई का सर्वोत्तम समय अक्टूबर का अंतिम सप्ताह से लेकर नवम्बर का पहला सप्ताह होता है । इस समय वातावरण में हल्की ठंड होना शुरू हो जाती है और ऐसे वातावरण में चने की बुवाई करने से पौधे की ऊंचाई ज्यादा नही बढ़ती है जिससे अधिक फलियाँ (गाठा) लगती है और उत्पादन में वृद्धि होती है । अधिक गर्म मौसम में चने की बुवाई करने से चने का पौधा अधिक बड़ा हो जाता है परन्तु उसमे फलियाँ कम लगती है ।

बीजोपचार, बीज की मात्रा व बुवाई का तरीकाः चने के बीज की बुवाई से पहले बीज को राइजोबियम और पी एस बी कल्चर से उपचारित कर लेना चाहिए इससे चने की फसल में लगने वाले रोगों से मुक्ति मिलती है और उत्पादन में भी वृद्धि होती है । एक बीघा खेत के लिए 8 से 9 किलो बीज पर्याप्त होता है । खेत की मिट्टी में चने की बुवाई लगभग 10 सेंटीमीटर गहराई में की जानी चाहिए इससे बीज में लगने वाले रोग कम लगते है ।

खाद प्रबंधनः चने की खेत में बुवाई से पहले आधी ट्राली केंचुआ खाद या 1 से 2 ट्राली देसी गोबर खाद खेत में फैला दे और फिर बुवाई करने से लाभ मिलता है । बुवाई के हर 15 दिन के अंतराल पर वर्मीवाश का छिडकाव करे । इससे पौधो को सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व मिलते है और पौधा स्वस्थ बना रहता है ।

चने की परम्परागत खेती के लिए सिंचाई प्रबंधनः यदि बुआई के समय खेत में पर्याप्त मात्रा में नमी है, तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती । चने की फसल को प्रारंभिक अवस्था में पानी नहीं देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से जड़ों में गांठे बनने में रूकावट आती है एवं जड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है । यदि सिंचाई की जरूरत हो तो एक सिंचाई फूल बनने पर और दूसरी फलियाँ बनने पर करनी चाहिए ।

खरपतवार और कीट प्रबंधनः चने की खेती के लिए फसल की प्रारंभिक अवस्था में दो बार निंदाई-गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए जिससे कि खरपतवारों पर नियंत्रण पाया जा सके ।

- ❖ चना भेदक इल्ली चने की फली में छेद करके अपना मुंह अंदर घुसाकर सारा का सारा दाना चट कर जाती है । इनकी रोकथाम के लिए "प्रकाश प्रपंच' लगाना चाहिए । 3 से 4 फेरोमोन ट्रेप प्रति बीघा के मान से खेत में लगाने से नर कीट आकर्षित होकर ट्रेप में फंस जाते है । फलस्वरूप इल्लियो

की संख्या को नियंत्रित करना आसान हो जाता है।
- ❖ गर्मी में खेतों की गहरी जुताई करने से कीट प्रकोप कम हो जाता है।
- ❖ चने की 10 कतार के बाद 2 कतार धनियाँ या अलसी के लगाने से कीट प्रकोप को कम किया जा सकता है ।
- ❖ चना फसल के चारों ओर पीला गेंदा फूल लगाने से चने की इल्ली का प्रकोप कम किया जा सकता है । मादा कीट पहले गेंदा फूल पर अंडे देती है । इसलिए तोड़ने योग्य फूलों को समय-समय पर तोड़कर उपयोग करने से अण्डे और इल्लियों की संख्या कम करने में मदद मिलती है और अतिरिक्त कमाई भी प्राप्त होती है ।

- ❖ खेत में जगह-जगह पर तीन फुट लंबी डंडियॉ टी एन्टीना (T-आकार में) लगा देना चाहिए इससे कीटभक्षी चिड़ियों को बैठने के लिए स्थान मिलता है और वह कीट को खाती है ।
- ❖ नीम की निंबोली का अर्क 5 से 10 प्रतिशत सुंडियों के नियंत्रण में लाभकारी होता है।
- ❖ खेत में अवशेष नही छोड़ना चाहिए, क्योंकि दीमक उसको खाकर जीवित बनी रहती है । इसलिए जुताई करके इन्हे एकत्रित करके जला दें।
- ❖ 1 लीटर गौमूत्र को 6 लीटर पानी के साथ मिलाकर बार-बार दीमक के घरों में डालने से इनके प्रसार को रोका जा सकता है। दीमक, जड़ व तने में घुसकर खोखला कर पौधे खत्म कर देती है। इसकी रोकथाम के लिए दीमक की बाम्बी को खोदकर रानी दीमक को मार देंना चाहिये।
- ❖ खेत में पूरी तरह से सड़ी हुई खाद का प्रयोग करना चाहिए । खेतों के बीच-बीच में घास फूस के छोटे-छोटे ढेर शाम के समय लगा देने चाहिए, रात्रि में जब इल्लियाँ इन्हें खाने को निकलेगी तो सुबह होने पर इन्ही में छिपेगी जिन्हे हाथ से हटाकर खेत से दूर ले जाकर आसानी से नष्ट किया जा सकता है।
- ❖ फसल बीजाई के समय जमीन में नीम के पत्तों से तैयार की गई खाद या नीम के बीजों से तैयार खाद का प्रयोग करने से दीमक का प्रकोप कम हो जाता है।

चने में होने वाले रोगः चने में अधिकांशतः झुलसा रोग हो जाता है जिसमे गहरे काले धब्बे छोटे-छोटे बिंदु के रूप में तनों, शाखाओं, पत्तियों और फलियों पर दिखाई देने लगते है तथा अधिक बीमारी होने पर पौधा सूख जाता है । इस रोग से बचाव के लिए 15 दिन के अंतराल पर 1 लीटर पंचगव्य में 100 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें ।

चने में प्रायः उखटा रोग हो जाता है जिसमे पौधे पहले पीले पड़ते हैं एवं फिर मुरझा कर सूख जाते हैं और जड़े काली हो जाती है तथा सड़ जाती है। इसकी रोकथाम के लिए गहरा हल चलाकर भूमि तैयार करनी चाहिए तथा बुआई से पहले बीज का जीव अमृत से उपचार करना चाहिए ।

क्षेत्र के अनुरूप मिट्टी का स्वरूप

भारत की विविधाताओं का मूल आधार मिट्टी है| देश की सांस्कृतिक विरासतें सीधे तौर पर मिट्टी की विशेषताओं से जुड़ी हैं। ये सांस्कृतिक विविधताओं का मुख्य आधार देश में पाई जाने वाली मिट्टी हैं, जो पूरे देश को एक करने के बाद भी अपना अलग-अलग रंग और रूप लिए हैं, असल में मिट्टी जमीन के ऊपर का वह भाग होता है जिसकी उपजाऊ क्षमता अलग- अलग जगहों में अलग -अलग होती है। जीवन यापन के लिए खेती करने के साथ ही मिट्टी की गुणवत्ता और उसके प्रकार के बारे में जानना बहुत जरूरी है, हमे इस बारे में अधिक जानकारी नहीं होने के कारण कई बार नुकसान उठाना पड़ता है।

राजस्थान में 7 प्रकार कि मिट्टी पायी जाती है : तो इस माह में वाते पत्रिका के माध्यम से मिट्टी के प्रकार व विशेषताओं के बारे में जानेंगे ....

1. जलोढ़ मिट्टी

यह माटी राजस्थान के पूर्वी भाग में मुख्यतः पायी जाती है। इसका थोड़ा-सा क्षेत्र उत्तरी राजस्थान में भी है। अलवर, भरतपुर, जयपुर और सवाई माधोपुर जिलों तथा गंगानगर जिले के मध्यवर्ती भाग में यह मिट्टी देखने को मिलती है। जलोढ़ मिट्टी का निर्माण नदियों से होता है। जलोढ़ मिट्टी गेहूँ कि फसल के लिए उत्तम माना गया है। जलोढ़ मिट्टी का निर्माण बलुई मिट्टी एवं चिकनी मिट्टी के मिलने से होता है।

इस माटी में नाइट्रोजन अल्पमात्रा में है, किंतु चूना, पोटाश, फॉस्फोरस, लोहा अनेक पदार्थ हैं।

2. काली मिट्टी

यह मिट्टी उदयपुर संभाग के कुछ भागों डूंगरपुर, बाँसवाड़ा कुशलगढ़, प्रतापगढ़ तथा पूर्व में कोटा व झालावाड़ क्षेत्रों में पायी जाती है। इस मिट्टी में नमी को रोके रखने का विशेष गुण होता है। यह मिट्टी खूब उपजाऊ भी होती है। (यह मिट्टी नकदी फसल के लिए उपयुक्त है।) इस मिट्टी को रेगुर मिट्टी भी कहते है ये मिट्टी राजस्थान की सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी है यहाँ 50-60 फुट की गहराई पर पानी मिल जाता है।

काली मिट्टी में धान की उपज अधिक होती है। काली मिट्टी सुखने पर बहुत अधिक कड़ी एवं भीगने पर तुरंत चिपचिपा हो जाती है।

3. पीली -लाल मिट्टी -

इस प्रकार की मिट्टी उदयपुर व भीलवाड़ा जिलों के पश्चिमी भाग तथा सवाई माधोपुर, अजमेर व सिरोही जिलों में पायी जाती है। इसमें लौह अंश होने के कारण इसका रंग लाल व पीला है। कहीं-कहीं पर इस माटी का रंग हल्के-पीले से लेकर गहरा भूरा देखने को मिलता है।

4. लैटेराइट मिट्टी

इस प्रकार की मिट्टी बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ व कुशलगढ़ के कुछ क्षेत्रों में देखने को मिलती है। इस माटी में चूना, नाइट्रेट व ह्यूमरस अल्पमात्रा में है। यह मिट्टी पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र में पायी जाती है।

5. रेतीली मिट्टी

इस प्रकार की मिट्टी मरुस्थलीय क्षेत्र में पाई जाती है राजस्थान में इस मिट्टी का विस्तार राजस्थान में 38% तक पाया जाता है इस मिट्टी को एरिडिसोल्स भी कहा जाता है

6. लाल -काली मिट्टी

यह मिट्टी उदयपुर के पूर्वी भाग में चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा और भीलवाड़ा जिले के पूर्वी भाग में पायी जाती है। इस माटी में क्षार का अंश भी होता है। इन भागों में मक्का व कपास की खेती मुख्यतः की जाती है। यहाँ 50-60 फुट की गहराई पर पानी मिल जाता है।

7. दोमट मिट्टी

यह मिट्टी उदयपुर जिले के मध्यवर्ती व दक्षिणी भागों में और सम्पूर्ण डूंगरपुर जिले पायी जाती है। लौह-कण के सम्मिश्रण के कारण यह लाल दिखाई देती है। इस माटी में पोटाश व चूने का अंश पर्याप्त मात्रा में होता है। इस माटी पर मक्का,चावल की खेती की जाती है।

सरकार द्वारा मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिये प्रमुख पहल : - परंपरागत कृषि विकास योजना, पोषक तत्त्व आधारित सब्सिडी (NBS) योजना,राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन (NMSA), मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना ।

परिवार स्तर पर प्रयास : फसल का बदल- बदल कर बोना,मृदा प्रबंधन के लिये स्थानीय पंचायतों की मदद से मृदा की गुणवत्ता की निगरानी करने और नियमित रूप से मृदा कि जाँच का हिसाब किताब रखने कि ज़िम्मेदारी स्वयं ले ।

विश्व मृदा दिवस - 5 दिसंबर को बड़ी धूमधाम से मनाया जाना|

समुदाय स्तर पर प्रयास : समस्त समुदाय मिलकर मृदा प्रबंधन के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे | विश्व मृदा दिवस - 5 दिसंबर को बड़ी धूमधाम से मनाया जाना एवं सरकार द्वारा संचालित मृदा प्रबंधन के लिए योजनाओं के माध्यम से ग्राम पंचायत विकास योजना में भाग लेकर मृदा प्रबंधन सबंधी अधिक से अधिक कार्य करवाए जाना |

बाल स्वास्थ्य एवं पोषण स्वराज

पोषण के 5 सूत्र है हमारे लिए जरुरी ....!

बेहतर पोषण प्राप्त करना सभी का समान अधिकार है। संविधान के अनुच्छेद 47 के अनुसार लोगों को बेहतर पोषण प्रदान कराना सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी भी है। इसको लेकर महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पोषण त्यौहार से व्यवहार परिवर्तन के लिए पोषण के "5 सूत्र " दिए गए हैं। जिसमें पहले सुनहरे 1000 दिन, पौष्टिक आहार, एनीमिया प्रबंधन, डायरिया रोकथाम एवं स्वच्छता को शामिल किया गया है।

1. पहले सुनहरे 1000 दिन :

- पहले 1000 दिनों में तेजी से बच्चे का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। जिसमें गर्भावस्था की अवधि से लेकर और बच्चे के जन्म से 2 साल की उम्र तक अवधि शामिल है। इस दौरान उचित स्वास्थ्य, पर्याप्त पोषण, प्यार भरा व तनाव मुक्त माहौल तथा सही देखभाल बच्चे का पूरा विकास करने में मदद करते हैं।
- इस समय माँ और बच्चे को सही पोषण और खास देखभाल की जरुरत होती है।

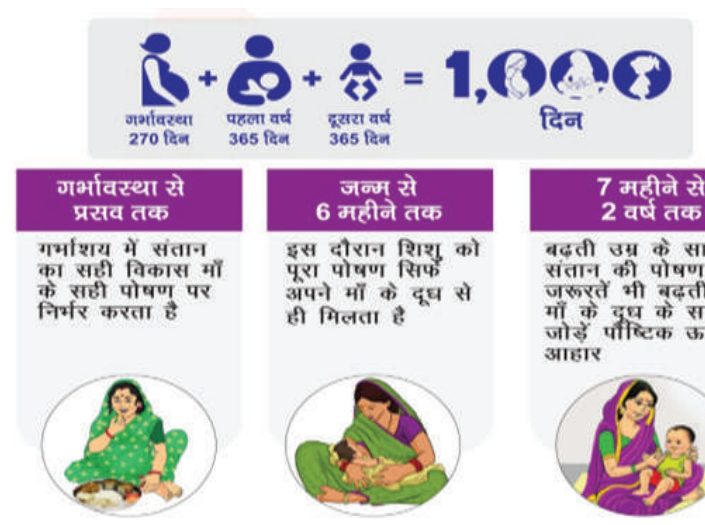

2. पोष्टिक आहार :

- सभी उम्र के लोगों के साथ-साथ बच्चे को 6 माह के होने पर पर्याप्त मात्रा में तरह-तरह का आहार अवश्य खिलाना चाहिए।

- विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ खाएं, जैसे कि रोटी/चावल और साथ ही पीले व काले रंग की दालें, हरी पत्तेदार सब्जियाँ जैसे- पालक, मेथी, चोलाई और सरसों, पीले फल जैसे -आम व पका पपीता भी लें।
- यदि मांसाहारी है तो अंडा, मांस और मछली खाना चाहिए।
- खाने में दूध, दूध से बने पदार्थ और अखरोट आदि शामिल करना चाहिए।
- आँगनवाड़ी से मिलने वाला पोषाहार अवश्य खाना चाहिए।
- जब बच्चा 6 महीने का हो जाए तो माँ के दूध के साथ घर का बना मसाला और गाढ़ा ऊपरी आहार भी शुरू करें जैसे -कद्दू, लौकी, गाजर, पालक,दाल और यदि माँसाहारी है तो अंडा, मांस व मछली भी देना चाहिए।
- बच्चे के खाने में ऊपर से 1 चम्मच घी, तेल या मक्खन मिलाएँ।
- बच्चे के खाने में नमक, चीनी और मसाला कम डालें।
- एक खाद्य पदार्थ से शुरू करें, धीरे-धीरे खाने में विविधता लाएँ। बच्चे का खाना रुचिकर बनाने के लिए अलग-अलग स्वाद व रंग शामिल करना चाहिए।
- बच्चे को बाजार का बिस्कुट, चिप्स, मिठाई, नमकीन और ज्यूस जैसी चीजें न खिलाएं। इससे बच्चे को सही पोषक तत्व नहीं मिल पाते।

3. एनिमिया की रोकथाम :

- एनिमिया से रोकथाम के लिये, आयरन युक्त आहार जैसे कि दालें, हरी पत्तेदार सब्जियाँ, पालक, मेथी, सरसों, फल, दूध, दही, पनीर आदि खाएँ। यदि माँसाहारी है तो, स्वस्थ शरीर और तेज दिमाग के लिये अंडा, मांस व मछली का भी सेवन करना चाहिए।
- खाने में नींबू, आंवला, अमरूद जैसे खट्टे फल शामिल करें, जो आयरन के अवशोषण में मदद करते हैं।
- इसके अलावा अलग से आयरन युक्त पूरक लें
  - ❖ 6-59 माह के बच्चों को हफ्ते में 2 बार 1 मिली. आई.एफ.ए सिरप देनी चाहिए।
  - ❖ 5-9 वर्ष की उम्र में आई.एफ.ए की एक पिंक गोली खानी चाहिए।
  - ❖ 10-19 वर्ष तक की उम्र में हफ्ते में एक बार आई.एफ.ए की नीली गोली खानी चाहिए।
  - ❖ गर्भवती महिला को गर्भावस्था के चौथे महीने से रोजाना 180 दिन तक आई.एफ.ए की एक लाल गोली खानी चाहिए।
  - ❖ धात्री महिला को 180 दिन तक आई.एफ.ए की एक लाल गोली का सेवन करना चाहिए।

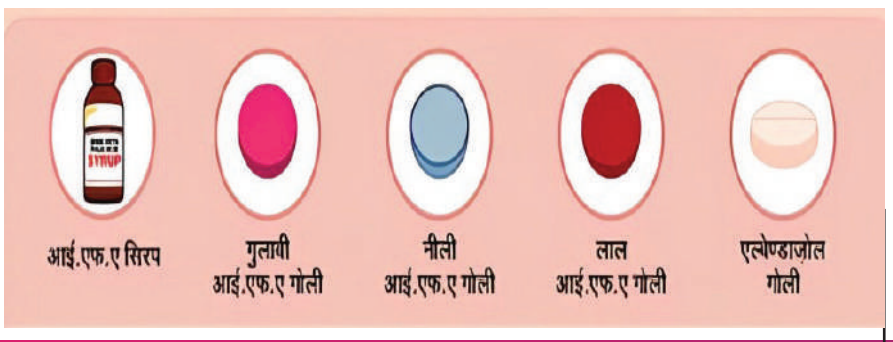

- कृमिनाश के लिये कीड़े की दवा (एल्वेण्डाजोल) की निर्धारित खुराक खानी चाहिए।
- जन्म के तुरंत बाद बच्चे की गर्भनाल 3 मिनट बाद ही काटें। इससे नवजात बच्चे के खून में आयरन की मात्रा बनी रहती है।
- सभी उम्र के लोगों की एनीमिया की जाँच आवश्यक है ताकि हीमोग्लोबिन के स्तर के अनुसार उसका उपयुक्त इलाज किया जा सके।

4. डायरिया का प्रबन्धन :

- व्यक्तिगत साफ-सफाई, घर की सफाई, आहार की स्वछता का ध्यान रखें और डायरिया से बचाव के लिये हमेशा स्वच्छ पानी पीना

चाहिए।

- माताएँ 6 माह तक बच्चे को केवल स्तनपान ही करवाएँ। कोई और खाद्य पदार्थ यहाँ तक पानी भी नहीं देना चाहिए वह भी बच्चे में डायरिया का कारण बन सकता है।
- डायरिया होने पर भी माँ को स्तनपान नहीं रोकना चाहिए बल्कि बार-बार स्तनपान करवाना चाहिए।
- शरीर को दोबारा स्वस्थ बनाने के लिये बच्चे को नियमित रूप से और अधिक भोजन खिलाना चाहिए तथा 6 माह से बड़े बच्चे को ऊपरी आहार के साथ बार-बार स्तनपान करवाना चाहिए।
- बच्चे को डायरिया होने पर तुरंत ओ.आर.एस. तथा अतिरिक्त तरल पदार्थ देना चाहिए और जब तक डायरिया पूरी तरह ठीक न हो जाए तब तक जारी रखना चाहिए।
- डायरिया से पीड़ित बच्चे को 14 दिन तक जिंक देना चाहिए. अगर दस्त रुक जाए तो भी यह देना बंद नहीं करना चाहिए।

5. स्वच्छता और साफ-सफाई :

- हमेशा साफ बर्तन में ढक कर रखा हुआ शुद्ध पानी पीना चाहिए, बर्तन को ऊँचे स्थान पर और साथ में डंडीदार लौटे भी रखना चाहिए।

- अपनी स्वच्छता सुनिश्चित करे, हमेशा खाना बनाने, शौच के बाद, स्तनपान से पहले और बच्चे के मल के निपटान के बाद साबुन और पानी से हाथ अवश्य धोना चाहिए।
- बच्चे को खाना खिलाने से पहले बच्चे के हाथों को साबुन और पानी से जरूर धोना चाहिए।
- शौच के लिये हमेशा शौचालय का उपयोग ही करना चाहिए।
- किशोरी को माहवारी के दौरान व्यक्तिगत साफ-सफाई को अपनाना चाहिए।

प्रशासन व समुदाय की भूमिका :-

स्थानीय प्रशासन की भूमिका

पोषण के महत्व और जागरूकता के लिए स्थानीय प्रशासन व समुदाय की सामूहिक बैठक बुलाये व सम्बंधित विषय पर चर्चा कर एक कार्य योजना का निर्माण करे ।
स्वास्थ्य समिति व कार्यकर्त्ता अपने- अपने क्षेत्र में भ्रमण कर परिवारों से संपर्क करे व पोषण के 5 सूत्रों से सम्बंधित संदेश हितग्राहियों तक पहुंचाये उसका अनुपालन करने के लिए प्रेरित करे ।
स्वास्थ्य केन्द्रों व आंगनवाडी केन्द्रों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करे और सभी को इसके लिए जागरूक करे और समय समय पर हितग्राहियों को स्वास्थ्य शिक्षा देना सुनिश्चित करे ।
पंचायत समिति पोषण और स्वास्थ्य सम्बंधित मुद्दों को अपनी कार्ययोजना में शामिल करे और समीक्षा करे ।

समुदाय की भूमिका

समुदाय स्थानीय स्तर पर आयोजित होने वाली बैठको में पोषण के महत्त्व और पोषण के 5 सूत्रों के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ।
स्थानीय स्वास्थ्य समिति के सदस्यों से चर्चा कर उनके फलें में समुदाय को पोषण से सम्बंधित जानकारी साझा करने हेतु प्रेरित करे ।

सच्चा बचपनः भावी पीढ़ियों को सुरक्षित सच्चा बचपन प्रदान करने में समुदाय की भूमिका

आदिवासी जीवन शैली के अनुसार सच्चा बचपन से तात्पर्य एक ऐसे आदिवासी बाल मित्र समाज से है जहाँ 0 से 18 वर्ष की आयु के समस्त बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएं, सुपोषण, पोष्टिक आहार, खेलने कूदने व मनोरंजन के साथ -साथ अपनी बात रखने का मंच व पर्याप्त अवसर प्राप्त हो, साथ ही साथ परिवार व समुदाय के बड़ो द्वारा भी उनकी बात को सुना जाएं ।

कारण	दुष्परिणाम	स्थानीय उपाय
पूर्व में सच्चा बचपन आदिवासी परम्पराओं के साथ झलकता था, जिसमें हमारे बच्चें एक सुरक्षित माहोल में पलते बढ़ते थे, लेकिन वर्तमान में बदलते परिद्रश्य के दौर में जहाँ हमारा आदिवासी परिवार अपनी आजीविका व गुजर बसर के लिए बाजार पर निर्भर हो चुका है जिसके कारण हमारे समाज के बच्चें भी इसकी भेंट चढ़ चुके है । जहाँ एक तरफ बहुत से आदिवासी परिवार अपनी आजीविका व गुजर बसर के लिए अपने गाँवो को छोड़कर बड़े शहरों की ओर रोजगार व मजदूरी की तलाश में पलायन कर रहा है तो वही दूसरी तरफ हमारा बच्चा भी इसकी चपेट में आ रहा है । परिवार के साथ उसको भी अपने बचपन का त्याग कर पलायन करने को मजबूर होना पड़ रहा है, और वहां वह भी अपने खेलने-कूदने व पढ़ने की उम्र को त्याग कर मजदूरी करने को मजबूर है, ताकि परिवार के भरण- पोषण में वह अपनी भागीदारी निभा सके ।	हमारे आदिवासी समाज की बहुत सी बेटियां जिनके हाथों में पढ़ने लिखने के लिए किताबें होनी चाहिए वह भी घर के काम काज के बोझ में शिक्षा से दूर हो रही है । दूसरी तरफ अगर हम छोटे बच्चों के पोषण की बात करें तो आज इन परिवारों में पोषक खाद्य सामग्री की कमी के कारण गर्भवती माँ व छोटे बच्चों को पूरा पोषण नहीं मिल पा रहा हैं जिसकी वजह से वह कमजोर हो रहे है इसलिए हमारे आदिवासी क्षेत्र में कुपोषण का स्तर बहुत ज्यादा है ।	▶ हमारी आने वाली भावी पीढियों को अगर वापस से सच्चा बचपन प्रदान करना है तो इसकी ज़िम्मेदारी परिवार के साथ पुरे समुदाय को लेनी होगी की हमारे बच्चों को पूरी तरह से सुरक्षित व सुपोषित बचपन प्रदान करें, जिसके लिए आपस में अपनी भूमिका का चयन कर उसका निर्वाह करें । स्थानीय स्तर पर ही अपनी परम्परागत खेती को पुनर्जीवित करने की ज्यादा जरूरत है ताकि बाजार पर निर्भरता को खत्म कर अपने पुराने परम्परागत या देशी बीजों व देशी दवाइयों के इस्तेमाल से अपनी खेती करें ताकि उससे उपजने वाली उपज हमारे खाद्य व पोषण सुरक्षा के साथ हमारी आजीविका बढ़ाने में भी मदद करें । ▶ पंचायत स्तर से जितने ज्यादा ग्राम विकास के कार्य मनरेगा के तहत स्वीकृत होंगे तो स्थानीय लोगों को नियमित रोजगार मिलेगा जिससे उनका पलायन रुकेगा ताकि हमारे बच्चें भी इस पलायन व बाल मजदूरी के दर्द से बच सके और स्थानीय स्तर पर ही उनको उचित शिक्षा, उचित पोषण, स्वास्थ्य सुविधाएँ व खेलने-कूदने के पर्याप्त अवसर सुनिश्चित हो सके ताकि आदिवासी जीवन शैली के अनुसार सच्चा बचपन की परिकल्पना को पुन: साकार किया जा सके ।

सामुदायिक ज़िम्मेदारी

भावी पीढ़ियों को सुरक्षित सच्चा बचपन (बाल मित्र वातावरण) प्रदान करने में सामुदायिक जिम्मेदारी :

- ग्राम- चौपाल के माध्यम से अपने गाँव में बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के लिये अपने गाँव को सबसे उपयुक्त स्थान बनायेंगे जिससे वे भी विकास में साथ चलें।
- लड़के -लड़की में भेद-भाव नहीं करना, व ना ही होने देना तथा बाजार के प्रभाव में आकर भ्रूण हत्या जैसी किसी भी गतिविधि को हमारे क्षेत्र में नहीं होने देने के लिए प्रयास करें।
- बच्चों में कुपोषण ना हो इसके लिए पोषण विविधता को पुनर्जीवित करने के लिए परंपरागत फसलों की पहचान, बीजों का संग्रहण व उनका प्रसार-प्रचार करें।
- हमारे गाँव के प्रत्येक बच्चों का जिसमे बिना लड़के लड़की के भेदभाव के मानसिक विकास के लिए उम्र अनुसार, आंगनवाड़ी, बालवाडी, माँ-बाड़ी, पाठशाला से जुडाव सुनिश्चित करवाएं, ताकि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं हो, व पलायन (दुसरे शहरों में काम पर जाना) से रोकते हुए बच्चों को बाल श्रम से मुक्त करवा सके।
- परिवार, समुदाय, ग्राम स्वराज समूह व ग्राम पंचायत सबको मिलकर सामुदायिक ज़िम्मेदारी लेनी होगी ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियों को विकास के सभी अवसर प्राप्त हो और वे अपने परिवार, समाज, गाँव, क्षेत्र, राज्य, देश, और विश्व के विकास में भागीदारी बन सके।
- बच्चों की सुरक्षा प्रदान करने के लिए गाँव के सक्रिय युवा (युवक-युवतियों) को जागरूक व संगठित कर बाल मित्र वातावरण निर्माण में उनका योगदान ले।
- विद्यालय में बाल मित्र वातावरण बने इसके लिए अध्यापकों के साथ मिलकर वृक्षारोपण, पोषण वाटिका लगाना, मध्याह्न भोजन में यथा शक्ति सहयोग करना और समावेशी शिक्षा को सुनिश्चित करवाना ।
- भावी पीढ़ियों व बुजुर्गों के मध्य संवाद स्थापित करवाना, ताकि उनको बुनियादी शिक्षा पर समझ, आदिवासी संस्कृति की जानकारी, परम्परागत ज्ञान इत्यादि आसानी से प्राप्त हो सके ।
- सभी बच्चों का उपयुक्त शारीरिक विकास हो उसके लिए उन्हें संतुलित आहार को ध्यान में रखते हुए गाँव व परिवार आधारित पोषण सुरक्षा कैसे दी जाए व पोषण हेतु दूसरों पर निर्भरता किस प्रकार कम की जाए इस हेतु प्रत्येक परिवार प्रयास करें।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई- माही

साथियों हमारे लिए दीपावली का त्यौहार महत्वपूर्ण है। दीपावली के शुभ अवसर पर हम सभी को वाते पत्रिका के माध्यम से आपसी सवांद करने का अवसर मिला है । इस पवित्र त्यौहार पर हम सभी को हमारी परम्परागत परम्पराओं एवं सामाजिक मूल्यों का सम्मान करते हुए समुदाय के साथ मिलकर जीवन को बेहतर बनाने के लिए संकल्प लेना चाहिए। इस अवसर पर हमें प्रेम और करुणा की भावना से आपसी सवांद को मजबूती से बढ़ाना है । दीपावली के समय हमें हमारे घरों एवं आस-पास के सार्वजनिक स्थानों पर सफाई और सुरक्षा का खास ध्यान रखना चाहिए। इस शुभ अवसर पर पटाखों का उपयोग कम करते हुए पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना है । जब गाँव एकत्र होगा तो बच्चो के सुनहरे भविष्य के लिए हमें शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देते हुए बच्चो की समस्त आधारभूत सुविधाओं को समझते हुए बेहतर भविष्य के लिए आगे आना होगा, परन्तु इसमें हमे यह भी नहीं भूलना चाहिए की एक समय में हम हमारी वनस्पति और खेती को जितना जानते थे वह ज्ञान आज के समय में कम हुआ है तो क्यों ना हमारी परम्पराओं को युवा पीढ़ी तक पहुंचाए ताकि पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता रहे ।

सच्चा स्वराज- साथियों पिछले माह में हमारी चर्चा हुई थी कि हमारे गांवों कि ग्राम पंचायत विकास योजना बनाई जाएगी जिसमे स्थानीय समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है । विकास योजना से पूर्व बाल सभा , महिला सभा एवं वार्ड सभा का आयोजन करना होता है इस दौरान जितनी ज्यादा भागीदारी समुदाय कि होंगी उतनी ही स्वच्छ एवं मजबूत कार्य योजना का निर्माण होगा जिससे विकास कार्यों कि रुपरेखा को गति मिलेगी । हमारा बहुत सारा काम समुदाय कि भागीदारी से आसान हो जाता है ।

- गाँव में विकास के मुद्दों पर विस्तृत चर्चा के बाद ग्राम पंचायत के संसाधनों को देखते हुए गतिविधियों का प्राथमिकीकरण किया जाएगा ।
- क्षेत्रवार गतिविधियों को लेते हुए ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार की जाएगी।
- योजना निर्माण करते समय गरीबों, वंचितों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों का विशेष ध्यान रखा जाए।
- हमारे क्षेत्र के कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाए।
- गतिविधि की संभावित लागत को लेते हुए सम्बंधित विभाग योजना और क्षेत्र के नाम लिखा जाए ।
- हितग्राहियों की जानकारी को उचित प्रकार से प्रपत्रों में भरी जाए एवं उनके नाम के साथ नम्बर को जरूर लिखा जाए (जैसे आधार कार्ड नम्बर / राशन कार्ड नम्बर आदि) जिससे उन तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना आसान हो सके । ग्राम सभा में चर्चा के दौरान निकल कर आये हितग्राहियों के नाम भी इसमें लिखे जाए। इस प्रकार तैयार कार्ययोजना को ग्राम पंचायत सचिव या ग्राम रोजगार सहायक के द्वारा e-Gramswaraj पोर्टल पर दर्ज किया जायेगा ।

सच्ची खेती- ख़ुशी है की अब हमारी बहने पारंपरिक खेती को समझने के साथ ही करने भी लगी है जैसा की अभी हम देख रहे है बहुत से गाँवो में पिछली बार हिरमा चना और गेहूं का बीज उपचार कर खेत में बुवाई कि गयी थी , साथियों हमें कई वर्ष लगे पर इसके परिणाम आने लगे है । हमारे वागड़ क्षेत्र में अब बाजार पर बीज को लेकर समुदाय की निर्भरता कम होती दिखने लगी है । आज जिन्होंने बीज अपने घर पर जिसने

संजोकर रखा है वह किसान साथी सबसे पहले बीज खेत में बोता है और उत्पदान भी पहले लेता है और साथ ही आने वाले वर्ष के लिए बीज संजोकर रखता है । कई बार हम देखते है बाजार पर आश्रित किसान बाजार में जाएगा, वहां से महंगे दामो में बीज लाएगा उसमे दवाई डालेगा और फिर काम में लेगा ।इस प्रकार का अंतर हमको समझना होगा । हमारे क्षेत्र में कई प्रकार कि जड़ी- बूटी आसानी से मिल जाती है और इसका उपयोग आज भी हम जानते है तो इनका उपयोग करते हुए आने वाली पीढ़ी को भी बताना है । हमको हमारी आने वाली पीढियों के लिए जल,जंगल,जमीन, जानवर और बीज को बचाए रखे ताकि वो पीढ़ी भी हमारी सिख लेकर हमारी संस्कृति और विरासत को बचाए रखे ।

सच्चा बचपन- 14 नवम्बर से 20 नवम्बर तक बाल सप्ताह का आयोजन होने जा रहा है जिसमे पंचायत स्तर पर प्रभात फेरी निकालना और विशेष ग्राम सभा व बाल संवाद का आयोजन करवाना, बच्चों द्वारा सुझाव लिया जाएं ताकि विकास कार्य योजना बाल केन्द्रित हो सके,बाल स्वराज समूह की बैठक में बाल मित्र गाँव की अवधारणा को लेकर चर्चा करना और इस दिशा में हुई प्रगति की समीक्षा करना है । गाँव में बच्चो के लिए जैसे खेल मैदान,स्कूल की चार दिवारी,शौचालय एवं पुस्तकालय का निर्माण मुख्य रूप से होना चाहिए । पिछले कुछ वर्षो में खेल मैदान के लिए बच्चो ने प्रस्ताव ग्राम सभा में रखा है जो की कुछ हद तक सफल रहा है ।

साथियों वाते पत्रिका के माध्यम से अनुरोध है की बच्चे ही कल का भविष्य है । बच्चो के भविष्य के लिए वातारण निर्माण करे ताकि आने वाली पीढ़िया आपके नेक कामो के लिए सदेव याद करे ।

सच्चा स्वराज

: जनजाति भागीदारी योजना :

जैसा कि आप सभी जानते है कि वाग्धारा संस्था बांसवाड़ा द्वारा हर माह वाते पत्रिका के संस्करणों में विभिन्न प्रकार कि महत्वपूर्ण जानकारी समुदाय तक आसन शब्दों में पहुंचाई जा रही है । राजस्थान सरकार द्वारा "जनजाति भागीदारी योजना" विश्व आदिवासी दिवस 9 अगस्त 2021 से लागु कि है । इस अंक में विस्तार पूर्वक जानेगें कि :-

जनजाति विकास के लिये भारतीय संविधान में विशेष प्रावधान है। भारतीय संविधान की अनुसूची 5 में अनुसूचित जनजातियों एवं अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन और नियंत्रण हेतु राज्य की कार्यपालिका की शक्तियों का विस्तार किया गया है, इन्ही शक्तियों के आधार पर राजस्थान में जनजाति समुदाय के समग्र विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा वर्ष 1975 में जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की स्थापना की गयी। जिससे एक समन्वित और सुनियोजित तरीके से अनुसूचित जनजातियों के विकास के लिये कार्यक्रमों की समग्र नीति, योजना और समन्वय किया जा सकें।

उद्धेश्यः अनुसूचित क्षेत्र का सर्वांगीण विकास जनजातियों का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास जनजाति विकास की विभिन्न योजनाओं का निर्माण, समन्वय, नियंत्रण एवं निर्देशन जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में प्रशासन के स्तर को अन्य क्षेत्रों के समकक्ष लाना एवं जनजाति वर्ग के जीवन स्तर का उन्नयन ।राजस्थान में रहने वाले जनजाति समुदाय के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन प्रयासों में भागीदारी बढ़ाने के लिए जनजाति भागीदारी योजना वर्ष 2021-22 से प्रारंभ की गई है।

इस योजना के तहत विभिन्न प्रकार के कार्य जनजाति समुदाय

की आवश्यकता के अनुरूप करवाए जा सकेंगे। योजना के तहत आवश्यक सामुदायिक संपत्तियों के निर्माण एवं मरम्मत, संवर्द्धन, संरक्षण के साथ रोजगार सृजन, कौशल प्रशिक्षण, डेयरी, पशुपालन इत्यादि के क्षेत्र में भी कार्य करवाए जा सकेंगे ।

उदाहरण के तौर पर विद्यालयों, छात्रावासों, चिकित्सा केन्द्रों, आंगनबाडी केन्द्रों, मां-बाडी केन्द्रों, सड़क, पुलिया, जल संग्रहण ढांचों /एनीकटों, पेयजल योजनाओं, सामुदायिक शौचालयों, बस स्टैंड इत्यादि के निर्माण एवं मरम्मत, बल्क कूलर की स्थापना, हैचरी प्लांट, विभिन्न प्रकार की कोचिंग एवं प्रशिक्षण इत्यादि कार्य योजना के तहत करवाये जा सकेंगे। योजना के तहत वे कार्य ही अनुमत होगे जिनके माध्यम से लाभान्वित होने वाली जनसंख्या कम से कम 50% भाग जनजाति समुदाय हो । योजना के तहत निजी भूमि पर निर्माण अनुमत नहीं होंगे एवं साथ ही भूमि / अधिग्रहण के पेटे मुआवजा भुगतान, धार्मिक स्थलों का निर्माण, जातिगत या धार्मिक आधार पर सामुदायिक भवनों का निर्माण अनुमत नहीं होगा। इस योजना के तहत मुख्यतः नवीन कार्य/ गतिविधियां संपादित की जाएगी तथा विशेष परिस्थितियों में अन्य योजनांतर्गत कराए जा रहे अपूर्ण कार्यों को योजना के तहत वित्त पोषित किया जा सकेगा। योजना के तहत कार्य एवं गतिविधियों हेतु आवश्यक राशि का कम से कम 30 प्रतिशत की राशि जन सहयोग, स्वयं सेवी संस्थाओं, दानदाताओं या अन्य किसी सरकारी योजना / कार्यक्रम/फंड के तहत उपलब्ध कराए जाने पर शेष राशि इस योजना के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी।

1. योजना के अंतर्गत 10 लाख रु. तक के कार्यों की स्वीकृति जिला कलक्टर । 2. 10 लाख से अधिक तथा रू. 25 लाख तक के कार्यों की स्वीकृति आयुक्त ।

3. जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के स्तर और 25 लाख रूपये से अधिक राशि की स्वीकृतियां जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के स्तर से जारी की जाएगी।

योजना के तहत कराए जाने वाले कार्यों का कियान्वयन राजकीय विभाग या राज्य सरकार के उपक्रम / निगम बोर्ड इत्यादि से कराया जाएगा तथा योजना के तहत सृजित होने वाली परिसंपत्तियों का स्वामित्व राज्य सरकार का होगा। योजनांतर्गत होने वाली व्यय की मासिक सूचना संबंधित एजेंसी द्वारा एवं जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग को उपलब्ध कराई जाएगी तथा साथ ही उपयोगिता एवं पूर्णता प्रमाण पत्र भी प्रचलित व्यवस्था के अनुरूप निर्धारित परिपत्र में दिए जाएंगे ।राज्य स्तर पर जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग इस योजना का प्रशासनिक विभाग होगा।

स्थानीय उपाय – समुदाय स्थानीय स्तर पर विद्यालयों, छात्रावासों, चिकित्सा केन्द्रों, आंगनबाडी केन्द्रों, मां-बाडी केन्द्रों, सड़क, पुलिया, जल संग्रहण ढांचों /एनीकटों, पेयजल योजनाओं, सामुदायिक शौचालयों, बस स्टैंड इत्यादि के निर्माण एवं मरम्मत सबंधी सूचि व प्राथमिकता के आधार पर सर्व सहमती से निर्णय लेकर योजना से करवाए ।

समुदाय कि भूमिका – सार्वजनिक भूमि पर किये गये अतिक्रमण को हटाने के लिए एक मंच पर आकर सर्व सहमती से निर्णय ले कि भविष्य में अतिक्रमण नही करेंगे । निगरानी तंत्र मजबूत करे । स्वयं जिम्मेदारी ले । समुदाय कि ज्यादा से ज्यादा भागीदारी बैठको में हो एवं सामाजिक,आर्थिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास में समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभाए ताकि ज्यादा से ज्यादा समुदाय हित में विकास कार्य करवाए जा सके ।

| समुदाय बने जन योजनाओं में भागीदार |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – मानगढ़

आप सभी को कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – मानगढ़ कि ओर से दीपावली कि हार्दिक शुभकामनायें चूँकि आप अपने परिवार और दोस्तों के साथ रोशनी के इस आनंदमय त्यौहार को मनाने के लिए अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत करते हैं। इस शुभ अवसर पर हम सबको हमारे समुदाय में वंचितों परिवारों के बारे में सोचना शुरू करने और उनके जीवन में सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए एक छोटा सा प्रयास करने का सही समय है।

सच्चा स्वराज : मानगढ़ इकाई में 8 कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनो कि मासिक बैठको में अलग –अलग विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय जिनमे सामुदायिक विकास के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन, बाल अधिकार के साथ ही समुदाय हित में निर्णय लिए है कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन आनंदपुरी द्वारा आपसी सवांद में निकलकर आया कि समुदाय में मिट्टी के बर्तनों का बड़ा महत्व है और ये हमारी संस्कृती का अभिन्न अंग है लेकिन वर्तमान समय में धातु के बर्तनों ने जगह ले ली है स्वराज संगठन निर्णय लेने लगे है आदिवासी संस्कृती में शुरू से ही समुदाय मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करता आया है ये आदिवासी समुदाय कि संस्कृती का हिस्सा रहे है लेकिन बाजारीकरण के प्रभाव से दिनोंदिन घरों में धातु के बर्तनों का उपयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है |

इस तरह अब मानगढ़ इकाई में संगठनो द्वारा मिट्टी के महत्व पर आपसी सवांद करने लगे है| मिट्टी के उपयोग के बारे में बात करते हुए कहते है कि मिट्टी कुपोषण को भी मिटा सकती हैं। कुपोषित बच्चों को मिट्टी के बर्तनों भोजन पकाकर दिया जाए तो पोषण की मात्रा कई गुना तक बढ़ जाती है स्वराज संगठन में महिला सदस्यों द्वारा अब खुलकर बात कि जाने लगी है एवं अपनी बात संगठनों में रखते हुए सरकार तक अपनी संस्कृती को बचाने के लिए बेबाक तरीके से बात रखने लगी है | इससे प्रतीत होता है कि स्वराज संगठनों में महिला सदस्यों द्वारा निर्णय लिए जाने लगे है | इसके साथ ही स्वराज संगठनों द्वारा अपने ही गाँवों में 180 राजकीय उच्च माध्यमिक विधालयों कि स्थिती जानने के लिए स्वयं आगे आकर अपने स्तर पर जानकारी एकत्रित कर रहे है |

सच्ची खेती : कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई मानगढ़ में रबी कि बुवाई के लिए 25 गाँवों में किसान महिलाओं को चने का बीज उपलब्ध करवाया गया है| सभी किसान महिलाये एक- दुसरे का सहयोग करते हुए समय पर बुवाई कर और एक फसल के साथ ही दुसरी फसल भी उगाने के लिए एक दुसरे को प्रेरित कर रही है, वर्तमान समय में सक्षम समूह की महिला सदस्यों द्वारा मासिक बैठकों में रबी के मौसम में की जाने वाली फसल और बीजोपचार को लेकर चर्चा की जिन परिवार के पास स्वयं का बीज नहीं है उन परिवार को बीज का आदान- प्रदान कर निरंतर एक दुसरे का सहयोग कर रही है| संस्था द्वारा किसानो के हितो को ध्यान में रखते हुए 750 परिवारों को चने का बीज उपलब्ध करवाया गया इसके साथ ही इन किसान महिलाओं को स्वयं का देशी बीज सुरक्षित रखने के लिए टंकी , खेती के लिए कृषि औजार उपलब्ध करवाए गये

है फसल में खाद देने के लिए वर्मी बेड में केचुआ खाद तैयार कर महिला किसान इसका उपयोग कर रही है | फसल को रोगों से बचाने के लिए दसपर्णी, निमास्त्र का उपयोग करने के लिए स्थानीय स्तर पर सामुदायिक सहजकर्ताओं द्वारा अवगत करवाया जा रहा है |

सच्चा बचपन : कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई मानगढ़ में 4 ब्लॉक झालोद , फतेहपुरा , गांगड तलाई, आनंदपुरी में बाल स्वराज समूह की 76 बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अनामांकित और ड्राप आउट 67 बच्चो को विद्यालय से जोड़ा गया| बच्चो के निरंतर विद्यालय जाने के बारे में बताया गया, बच्चो के अधिकारों को लेकर बात कि एवं बच्चो के साथ स्थनीय खेल सितोलिया, शेर बकरी आदि खेलो के बारे में बताया और गतिविधि करवाई गयी जिससे बच्चे शारीरिक रूप से स्वस्थ रहे| बच्चो के स्वास्थ्य और पोषण में बच्चो को मध्यांतर भोजन में फल,सब्जी मिले इस का ध्यान रखा जा रहा है, बैठक में शिक्षको की उपलब्धता को लेकर चर्चा की जिसमें 24 विद्यालय में शिक्षको की उपलब्धता पूर्ण नहीं है| इसके साथ ही 11 अक्टूम्बर 2023 को अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस राजकीय विधालयों में मनाया गया | इस दौरान "बालिकाओं के अधिकारों के सबंध में नेतृत्व, कल्याण, इस विषय की आवश्यकता पर जोर दिया गया| यह पहचानते हुए कि उनका नेतृत्व और कल्याण एक निष्पक्ष और अधिक समान भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं| इस खास दिन पर बाल स्वराज समूह में बालक बालिकाओं के साथ गतिविधियों के माध्यम से इस विशेष दिन का महत्व बताया गया जिसमे - अंतराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने के पीछे का मक़सद लड़कियों के जीवन में आने वाली चुनौतियों और उनके अधिकारों के संरक्षण के बारे में जागरुकता बढ़ाने और लड़कियों के अधिकारों से रूबरू कराया गया| समुदाय में लड़कियों द्वारा सामना की जाने वाली सभी प्रकार की असमानताओं को दूर करने के लिए एवं बालिकाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए उनकी स्वास्थ्य (Health), शिक्षा (Education) और पोषण के बारे में बताया गया |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – हिरण

वाते पत्रिका के सभी पाठकों को शरद नवरात्री की हार्दिक शुभकामनाऐ |

प्यारे साथियों,

हिरण इकाई की मासिक गतिविधियों के संस्करण में आप सभी का स्वागत है | वाग्धारा संस्था द्वारा 1041 गाँवों में सच्ची खेती, सच्चा बचपन एवं सच्चा स्वराज विषयों पर कार्य क्रियान्वित किया जा रहा है | हमारी हिरण यूनिट में 416 गाँव शामिल है जिसमे राजस्थान व मध्य प्रदेश राज्य की चार तहसील (कुशलगढ़, सज्जनगढ़, थांदला, बाजना) है |

शीत ऋतु का आगमन होने लगा है, इसकी दस्तक हम महसूस कर पा रहे है| खरीफ की फसल कटाई कार्य के साथ – साथ रबी फसल की तैयारी भी चल रही है | हमारी नियमित गतिविधियाँ क्षेत्र में निरंतर संचालित है | इकाई के कर्मठ कार्यकर्ता इन सब गतिविधियों को अपने कार्य क्षेत्र में सरलता से पहुंचा रहे है इस प्रकार सामुदायिक संवाद इन सब गतिविधियों के माध्यम से हो रहा है | संस्था द्वारा लोगों के साथ किया गया संवाद का परिणाम हमें कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम में नजर आया और इसमें दस हजार से भी ज्यादा लोगों की भागीदारी रही जिसमें इकाई की भागीदारी सराहनीय रही | समागम के दौरान समुदाय ने पूरी तरह अनुशासन का परिचय दिया जो काबिले तारीफ है | समागम के दौरान जन मंच द्वारा तैयार किया आग्रह पत्र की प्रक्रिया लाजवाब रही | जन मंच की प्रक्रिया में संगठन के सदस्यों की भागीदारी बहुत अच्छी रही है | समागम के दौरान विषय विशेषज्ञों से चर्चा के विषय (1) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में पोषण सुरक्षा हेतु बीज, खाद्य एवं वानस्पतिक विविधता के लिए एकीकृत कार्य ; (2) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में सततता के लिए ऊर्जा, जल और मृदा प्रबंधन की दक्षता ; (3) जलवायु परिवर्तन कार्यों और संप्रभुता के लिए युवाओं का नेतृत्व निर्माण; (4) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में आदिवासी संस्कृति और चक्रीय जीवनशैली का पुनर्जीवीकरण; जैसे जटिल विषयों की समझ जन मंच सदस्यों में बनी तथा विषयों से जुड़े प्रश्न जन मंच सदस्यों ने अच्छे से उठाये और आखिर एक ठोस आग्रह पत्र तैयार हुआ जो कि सभी हितधारको के साथ साझा हुआ एवं भविष्य में उसके अच्छे परिणाम आयेंगे | समागम काफी शानदार तरीके से शुरू हुआ उससे कही ज्यादा शानदार तरीके से समापन हुआ |

क्षेत्र में चुनावी सरगर्मी चालू हो गई है साथ ही आचार संहिता लागू हो गई है , इसमें हमें आने वाले समय में सरकार द्वारा तय मापदंड अनुसार नियमों की पालना करते हुए हमारा सारा कार्य सम्पादित करना होगा | वर्तमान समय में नियमित रूप से सक्षम समूह की बैठक हो रही है जिसमें किसान महिला के साथ खेती बाड़ी से संबंधित विषयों पर निरंतर संवाद होता है |

ग्राम स्वराज संगठन में निरंतर गाँव के विकास में लोगों की भागीदारी बढ़ाने को लेकर संवाद होता है फिर चाहे बात अपने हित एवं अधिकार की हो या ग्राम विकास योजना निर्माण की या फिर समुदाय से जुडी किसी भी समस्या या संबंधित मुद्दे की हो या ग्राम सभा में भागीदारी की , गाँव में संवाद की प्रक्रिया को सहेज बनाता है हमारा सहजकर्ता जो की हर गाँव में हर माह इसकी बैठक करता है जिसमें स्थानीय जन प्रतिनिधियों का अपर सहयोग रहता है | भूली बिसरी बाते , भूली बिसरी यादें , भूले बिसरे हमारे रीति रिवाज, भूली बिसरी हमारी खेती बाड़ी , भूली बिसरी हमारी परम्पराएँ, त्यौहार , गीत , भजन , पोशाकें, कार्य करने के तरीके आदि को याद कर उनकी महत्वता पर चर्चा एवं उनके तौर -तरीकों पर संवाद करते है जिससे हमारी संस्कृति एवं आदर्शों की झलक मिलती है | हमारे बच्चों के साथ नियमित संवाद रहता है इस दौरान पुराने खेल जिससे बचपन जिया जाता था आज वे हमारे मोबाइल के तले कुचल से गए है जिन्हें पुनः अपनाने के लिए बाल स्वराज समूह की बैठक में किया जाता है बच्चों को अपना मंच मिलता है और बच्चे खूब जोर सौर से अपनी भागीदारी निभाते है | इन्हीं तीनों समूह के माध्यम से ग्राम स्वराज की परिकल्पना को साकार करने का बीड़ा वाग्धारा संस्था ने उठाया है तथा निरंतर प्रयास से उसके करीब जाने का रास्ता बना रही है और इसमें योगदान देने हेतु हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन जो कि 40 गाँवों के मुद्दों की पैरवी कर रहा है तथा उन्हें उचित मंच पर साझा कर सरकार , समुदाय , विकास जगत तथा बाहरी दुनिया का ध्यान अपनी और आकर्षित कर रहे है | जिस का परिणाम आज हमें धरातल पर देखने को मिल रहा है | आज हमारे संगठन अपनी आवाज से स्थानीय सरकार , स्थानीय समुदाय , स्थानीय शासन में अपना निरंतर हस्तक्षेप कर रहे है , इससे संगठन का प्रभावी होना दिख रहा है | इस माह हमारी सच्ची खेती , सच्चा बचपन एवं सच्चा स्वराज को लेकर कार्य समय पर पूर्ण किये तथा आगामी माह की कार्य योजना तथा रणनीति बना कर बनी कार्य योजना को समय पर पूर्ण रूप से गुणवत्ता पूर्ण क्रियान्वयन करेंगे |

वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे साथ ही गाड़ी कि स्पीड कम रखे... क्योकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है |

बीज स्वराज

बीज संचयन, देखरेख एवं संरक्षण

बीज, प्रकृति की अनमोल विरासत है, जिस पर खेती की बुनियाद टिकी है। बीज का प्रमुख कार्य है नया जीवन लेकर उगना और खाद्यान्न देकर जीवधारियों की भूख शांत कर उनका पोषण करना साथ ही मौसम के अनुसार उगना ।

हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने जंगलों में उग रही फली व कद मूल फलों को बड़े परिश्रम से जांच परख कर खाने पीने की तकनीक विकसित की थी। उनकी मेहनत से खेती किसान और पशुपालन की संस्कृति का जन्म हुआ और यह संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रही। फसल बीज से किसान खेती करते हैं किन्तु पेड़ पौधे लताबेल कंदमूल जंगल दनकर स्वत उग जाते हैं उन्हें न खाद की जरूरत है न सिंचाई की। जिस तरह मानव की अभिलाषा अपने देश को आगे बढ़ाने की होती है उसी तरह प्रकृति की विरासत बीजों का स्वभाव भी है ।

बीज स्वराज - हरित क्रांति के बाद से बीज घरेलू या सामुदायिक कार्य न होकार केवल बाजार से प्राप्त की जाने वाली सरकार द्वारा दी जाने वाली या किसी कम्पनी और संस्था द्वारा दी जाने वाली सामग्री के रूप में पहचाने जाने वाली वस्तु बनकर रह गई है । बीज के व्यवस्थापन में समुदाय की भूमिका को स्थापित करने और फिर उसके परम्परागत सामुदायिक प्रबन्धन तन्त्र को मजबूती देने हेतु संस्था द्वारा बीज स्वराज का सपना देखा गया तथा स्वराज गांवों की परिकल्पना का बीज स्वराज एक महत्वपूर्ण अंग है. जो समुदाय द्वारा समुदाय के लिए हो रहा एक प्रयास है।

अनुपयुक्त भूमि में बीज बोने से बीज नष्ट हो जाते है। बीज अर्थात गुणवत्ताहीन बीज भी खेत में केवल लायडी बनकर रह जाता है। सुबीज अर्थात अच्छा बीज ही अच्छी भूमि से भरपुर उत्पादन दे सकता है।

बीज (seed) पौधों का जनक होता है। जो उपयुक्त मौसम में अंकुरित होकर पेड़ पौधों में विकसीत होते है। पौधो को प्रारंभिक पोषण के लिए खाद्य सामग्री की आवश्यकता होती है तथा यह बीज कवच से ढका हो तभी वो अनुकूल परिस्थितियों में एक स्वस्थ पौधा देने में समर्थ है बीज एक आत्मा है जो जल, मिट्टी व हवा के सम्पर्क में आकर पुनः नया जीवन धारण कर लेता है। किसान के लिए तो बीज भगवान है, अपना बीज सहज कर रखने की शुरू से ही सभी समाज में परंपरा रही है, जिस किसान के पास अपना बीज नहीं होता उसे समाज में हिन भावना से देखा जाता है। बीज आदिकाल से ही खरीदा या बेचा नहीं जाता था। बीज का आदान-प्रदान किया जाता है।

बीज को सहजते समय ध्यान देने योग्य बातें –

1. बीज के लिए फल का चुनाव करते समय ध्यान रहे कि फल रोगाणु मुक्त हो और पहला फल बीज के लिए सबसे उपयुक्त रहता है। फल पर टैग लगाने से फल का ध्यान रहता है। फल पूरा पका हुआ होना चाहिए।
2. जिन फलो के बीज पर सफेद झिली पाई जाती है. बीज निकालने के लिए पुरे फल को 3-4 दिन तक किसी बर्तन में गला ले और बीज को छान कर अलग कर ले जैसे-टमाटर, बैंगन, ककड़ी, खीरा आदि।
3. कुछ बीजों को फलों में ही सुरक्षित रखा जा सकता है जैसे लोकी, मिण्डी, गिलकी, तुरई, झुमकी आदि।
4. बीज के लिए रखे गए अनाज या बीज को हमेशा छाया में ही सुखाये, एवं छाया में ही संग्रह कर रखे।
5. बीज को संग्रह करने से पूर्व सुनिश्चित करे कि बीज पूरी तरह सुख गया है या नहीं, बीज की नमी 10% के आस- पास हो या बीज आपस में टकराने पर आवाज करे।
6. बीज में किसी भी प्रकार का कचरा या दुसरा बीज नहीं होना चाहिए।
7. सभी बीज एक ही आकार एवं रोगाणु मुक्त होने चाहिए |
8. बीज एकत्र करते समय ध्यान रहे की बीज जिस व्यक्ति से लिया गया है उसकी पूरी जानकारी (नाम, पता, फोन नं.) लेना आवश्यक है |
9. बीज के बारे में पूर्ण सूचना बीज संग्रहण प्रपत्र में अंकित करे (फसल की जानकारी मिट्टी की जानकारी, फसल की भौतिक जानकारी, उत्पादन, सिचाईं , विशेष गुण, व्यंजन, भंडारण विधि आदि)।

सरकार स्तर पर प्रयास : राज्य सरकार से अपेक्षा है कि खाद्य प्रस्संकरण स्थानीय स्तर पर किया जाये।

- ग्रामवासियों को उनकी योग्यता अनुसार तकनीकी ज्ञान प्रदान किया जाये उपलब्ध एवं संरक्षित विभिन्न बीजों को वृहद रूप से दूर दराज के इलाकों तक व्यवसायिक रूप से पहुंचाया जाये |
- बीजों के संरक्षण का कार्य वृहद रूप से विभिन्न स्थानों पर संस्था की शाखाएं खोलकर किया जा सके।
- सरकार द्वारा अनुदान देकर आस- पास के ग्रामीण युवा वर्ग को इसी दिशा में प्रोत्साहित कर प्रशिक्षण दिलाया जाये जिससे अन्य गावों तक भी बीज संजोकर रखी हुयी धरोहर का लाभ मिल सके।

सफलता कि कहानी

मिनाक्षी की मेहनत से बदली किस्मत

नाम :- मिनाक्षी देवी
पति का नाम :- प्रकाश
उम्र :- 32
शिक्षा :-बी.एड
कार्य :- कृषि
कार्य :- खेती
पशु धन :- 2 भैंस, 2 बैल, 3 बकरिया
गाँव :- कुण्डला
ग्राम पंचायत :- डिंडोरिया
ब्लॉक :- घाटोल
जिला :- बांसवाड़ा

बांसवाड़ा जिला मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर कि दूरी पर पहाड़ियों में बसा हुआ गांव कुण्डला जो कि पूर्ण तरह से आदिवासी क्षेत्र है। यहां के अधिकतर लोग जिले से बाहर जाकर मजदूरी का कार्य करते हैं। जहाँ परिवारों के छोटे- छोटे खर्च एवं पालन -पोषण किसी मजदूरी पर आश्रित होकर करना पड़ता है। इस गांव में रहने वाली मीनाक्षी देवी जो एक आदिवासी परिवार से है आज कल गांव के लिए उदाहरण बनी हुई है।

प्रारम्भिक स्थिति :- मिनाक्षी देवी और उनके पति दोनों पढ़े लिखे हैं शुरुआत में वे दोनों सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे थे , काफी प्रयास करने के बाद भी सरकारी नौकरी में सेवा देने का मौका नहीं मिला। इससे निराश होकर दोनों ने मजदूरी कार्य करने का सोचा। लेकिन प्रयास करने के बावजूद भी ऐसी कोई मजदूरी नहीं मिली जिससे उनके परिवार अच्छी स्तिथि में आ सके । अपने पति से बात की और गांव में से किसी से पैसे उधार लेकर एक छोटी सी राशन की दुकान डाली । दुकान डालने के बाद कुछ खर्चा दुकान से निकलने लगा लेकिन परिवार में 11 सदस्य होने के कारण दुकान से परिवार का पालन – पोषण सही से नहीं हो पा रहा था कई बार दुकान का सामान भी खत्म हो जाता और लाने के पैसे भी पर्याप्त नहीं होते थे।

स्थिती वही के वही थी और आर्थिक तंगी भी सता रही थी। दोनों ने काफी प्रयास किया लेकिन फिर भी सफलता नहीं मिल रही थी| अच्छा जीवन जीने के लिए सही से कार्य नहीं मिल रहा था।

एक दिन वागधारा संस्थान से संस्था कर्मी गांव में बैठक का आयोजन कर रहे थे। पढ़ी-लिखी होने के नाते इस बैठक में शामिल होने पहुंच गई। बैठक में बताई जा रही बातें ध्यान से सुन रही थी जिसमें संस्था के कार्मिक द्वारा सच्ची खेती, सच्चा बचपन एवं सच्चे स्वराज को लेकर चर्चा हो रही थी। इसबैठक के बाद संस्था के कार्मिक द्वारा सदस्यों का चयन किया गया। मिनाक्षी देवी ने भी अपना नाम सदस्य सूची में दर्ज करवाया । पढ़ी लिखी थी इस कारण संस्था के कार्मिको और समूह के सदस्यों द्वारा मिनाक्षी को सक्षम समूह का अध्यक्ष पद दिया गया। इसी दौरान संस्था के द्वारा खरीफ की फसल के लिए सब्जियों के बीज लोगों को वितरित किए गए थे जिसमे भिंडी,टमाटर,मिर्ची चवला,बैगन आदि के बीज भी शामिल थे। मिनाक्षी को भी अलग-अलग प्रकार के बीज दिए गए जिसमें से अपने खेत में सभी सब्जियों की बुवाई की और खाने जितना उत्पादन हुआ| भिंडी की फसल काफी अच्छी हुई, भिंडी के बीज को संरक्षित कर अगले वर्ष बुवाई में उपयोग में लेने का निश्चय किया | संस्था के द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए सब्जियों की देखभाल करने के लिए नीम आधारित दवाई बनाकर समय- समय पर छिड़काव कर पानी की उचित मात्रा का उपयोग करने से काफी अच्छा उत्पादन हुआ । करीब डेढ़ महीने बाद खेत में भिंडी की सब्जी की शुरुआत हुई। मिनाक्षी देवी एवं उसके पति ने अपने खेत की भिंडी बेचना शुरू किया। इससे आत्मविश्वास आया कि भिंडी की खेती से मुझे अच्छे आमदनी होगी इससे उसने दुगनी मेहनत शुरू की और समय-समय पर पानी खाद डालना तय किया। धीरे-धीरे भिंडी की पैदावार बढ़ने लगी और इससे अच्छी आमदनी होने लगी। इस आमदनी से किराने की दुकान पर भी सामान समय से आने लगा साथ ही परिवार की आर्थिक स्थिति में लगातार सुधार आने लगा। इस दौरान भिंडी गांव में जाकर बेचने का निश्चय किया साथ ही शेष बची हुई भिंड़ीयों को घाटोल के बाजार में बेचना शुरू किया। दिन भर में 1200 से 1500रु. की आमदनी हो जाती थी। जिससे परिवार का खर्चा एवं बच्चों की पढ़ाई का खर्चा आसानी से होने लगा, लगभग 3 महीने में 100000(एक लाख) की भिंडी का कारोबार हुआ। परिवार की स्थिति काफी सुदृढ़ हो गई। मिनाक्षी देवी से प्रभावित होकर गांव की अन्य महिलाएं जो कि समूह से जुड़ी हुई थी उन्होंने भी सब्जी लगाने का निश्चय। इस दौरान सभी समूह की महिलाओं की सहायता करते एवं उनको अलग-अलग प्रकार की जानकारियां समय-समय पर देती थी जिससे अच्छी तरह खाद बीज एवं पानी का ख्याल रख सके। मानो कि देलवाडा लोकिया ग्राम पंचायत में मिनाक्षी देवी सभी महिलाओं के लिए एक उदाहरण बन गई साथ ही सभी महिलाएं अपना प्रेरणा स्त्रोत मान लिया। जब से लेकर अब तक मिनाक्षी देवी अलग-अलग प्रकार की सब्जियां अपने खेत में लगाती है और उससे अच्छी आमदनी हो जाती है। अगर इस पहल का बदलाव देखा जाए तो परिवार अच्छी तरह से जीवन यापन करने लगा साथ ही परिवार की स्थिति सुदृढ़ हो गई एवं दोनों बच्चे अच्छे स्कूल में अपनी पढ़ाई कर रहे हैं।

वागधारा संस्थान ने भी समय-समय पर समूह की सभी महिलाओं को प्रशिक्षित किया और जरूरत का सामान उपलब्ध कराया जिसके कारण आज गांव के एक दर्जन से ज्यादा परिवार में बदलाव आ चुका है। इन परिवारों के अलावा भी अन्य परिवार सब्जियां एवं खेती के तौर-तरीकों में बदलाव कर अच्छी आमदनी ले रहे हैं। इस सफलता का श्रेय मिनाक्षी देवी एवं समूह की महिलाएं वागधरा संस्थान के कार्मिक एवं संस्थान की योजनाओं को देती है।

मिनाक्षी देवी का कहना है की मेहनत के साथ अच्छे मार्ग दर्शन और दिशानिर्देश मिले तो जीवन में बदलाव आसानी से अनुभव किया जा सकता है।

SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -rad1o@vaagdhara.org
यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

संकलन एवं सहयोग : जागृती भट्ट, बाबुलाल चौधरी ।